ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

अमरकान्त की कहानियों में मध्यवर्गीय विसंगतियाँ

डॉ. सूर्य नाथ पाण्डेय

ज्वाला देवी पी0जी0 कॉलेज, मानिकपुर, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

Received: 12/08/2026

Revised: 27/09/2026

Published: 02/10/2026

E-Mail
surya090788@gmail.com

DOI
[XXXXXXXXXXXXXX

How to Cite:

Pandey, S. N. (2026). अमरकान्त की कहानियों में मध्यवर्गीय विसंगतियाँ. Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika, 1(1), 13–32.

पाण्डेय, सूर्य नाथ (2026)। अमरकान्त की कहानियों में मध्यवर्गीय विसंगतियाँ। भारतीय नव शोध अध्ययन पत्रिका, खंड 1, अंक 1, अक्टूबर–दिसंबर 2026, पृ. 13–32

Copyright
© The Authors. This article is published by Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika.

सारांश/ Abstract

प्रस्तुत शोधपत्र में अमरकान्त की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय विसंगतियों का विश्लेषण किया गया है। अमरकान्त हिंदी कथा-साहित्य के ऐसे महत्वपूर्ण कहानीकार हैं, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, आर्थिक कठिनाइयों, बेरोजगारी, पारिवारिक तनाव, सामाजिक शोषण तथा नैतिक मूल्यों के पतन को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग की आकांक्षाओं, कमजोरियों, अंतर्विरोधों और निम्नवर्ग के साथ उसके संबंधों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। लेखक ने सामाजिक असमानता, प्रशासनिक अव्यवस्था, स्वार्थपरता, राजनीतिक पाखंड और मानवीय संवेदनाओं के ह्रास जैसी समस्याओं को भी उजागर किया है। उनकी विभिन्न कहानियों के पात्र आर्थिक अभाव, सामाजिक दबाव और परिस्थितिजन्य संघर्षों से जूझते दिखाई देते हैं। अमरकान्त का कथा-साहित्य समाज की वास्तविकताओं को सामने लाने के साथ-साथ पाठकों को सामाजिक विसंगतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार उनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन के विविध पक्षों और सामाजिक व्यवस्था की जटिलताओं को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मुख्य शब्द : **अमरकान्त, मध्यवर्गीय विसंगतियाँ, हिंदी कहानी, सामाजिक यथार्थ, आर्थिक संघर्ष, सामाजिक शोषण, मानवीय संवेदना**

ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य परम्परा में प्रेमचंद के बाद हिन्दी कहानी में आधुनिक युग के यथार्थ को सहज और सीधे ढंग से प्रस्तुत करने में अमरकान्त का नाम सर्वोपरि है। अमरकान्त ने अपनी यथार्थवादी विचारधारा और चिंतन के माध्यम से समाज में निम्न तबके के लोगों की महत्ता को समाज के समाने प्रस्तुत करते हुए उनकी स्थिति का सूक्ष्म विवेचन किया है। महात्मा बुद्ध ने कहा था- 'The foot feels the foot when it feels the ground' ठीक यही बात हिन्दी कथा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखे तो कोई गलत नहीं होगा। यदि कोई कथाकार अपनी रचनाओं में समय समाज और स्थिति का समावेश नहीं करता, तो तब तक उसकी रचना प्रभावी नहीं होती। वह अपनी रचनाओं में परिवेश तथा समय के अन्तर्विरोधों को सफलरूप से प्रस्तुत करता है।

हिन्दी कथा साहित्य में नयी कहानी दौर के यथार्थवादी कथाकार अमरकान्त की कहानियाँ मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय समाज से सरोकार रखती है। अमरकान्त ने स्वयं स्पष्ट किया कि- "हमारे मन में आदर्श की कल्पना होती है। हर आदमी के पास होती है। और जब हम उस आदर्श तक पहुँचने की कोशिश करते हैं, कल्पना में भी, जीवन में भी, तो बहुत सी बाधायें टकराती है यानी चरित्र और स्थिति की बाधाएँ। आप देखेगें खाली चरित्र ही नहीं स्थितियाँ भी आ जाती है। हमारी सामाजिक स्थिति ऐसी है कि एक आदमी पूरी तरह चेतनाशील भी नहीं बन पाता और उसकी स्थिति जानवर के स्तर पर गिरी हुई है। चेतना भी है नहीं भी है। दोनों स्थितियों से वह गुजरता है।"'

इनका यह कथन पूर्णतः मध्यवर्ग के लिए है। मध्यवर्ग पूरी तरह से समाज में जिम्मेदारियों की मार से सामाजिक व्यवस्था से संबंध रखता है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए बहादुर सिंह परमार ने लिखा कि- "अमरकान्त की कहानियों में मध्यवर्ग निम्नवर्ग के पात्रों की संख्या अधिक है, उच्चवर्गीय पात्र कम है। इनकी कहानियाँ भी इसीलिए निम्न तथा मध्यमवर्गीय समाज के चित्रों को अधिक प्रतिबिम्बित करती है। इस सफल प्रतिबिम्बन का कारण उनको जिन्दगी की गहरी समझ होना हैं इसलिए उनकी कहानियों की स्थितियाँ, घटनायें पात्र अपने सभी व्यौरों, रंगों एवं रेखाओं में जीवन्त है। उन्होंने जिन सामाजिक, विसंगतियों, विडम्बनाओं, अन्तर्विरोधों को जैसा देखा व महसूस किया उन्हें अपनी कहानियों की घटनाओं, स्थितियों व पात्रों में मूर्त करके ठीक उसी प्रकार से वास्तविकता को परिभाषित किया |" इस प्रकार समाज का बड़ा तबका यानी मध्यवर्ग में विसंगतियों अधिक विद्मान दिखाई देती है।

मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ

अमरकान्त ने "इण्टरव्यू कहानी में मध्यवर्ग के दोनों हिस्सों अर्थात् पहला मध्यवर्ग का वह हिस्सा जो अपने ही वर्ग का शोषण करता है तथा दूसरा हिस्सा अपने से नीचे के वर्गों का शोषण करता दिखाई देता हैं। 'इण्टरव्यू" कहानी में

राशन विभाग में 60 रूपये के वेतन के पद हेतु, जिलाधीश के बंगले पर मध्यवर्गीय बेरोजगार नवयुवकों की भीड़ लगी है। कलेक्टर के बंगले से निकलकर चपरासी की अकड़ देखकर लोगों में सामन्ती प्रवृत्ति दिखाई देती है। इस कहानी में मध्यवर्गीय नवयुवक आपस में बात करते हैं कि- "पता नहीं क्यों इतनी देर हो रही है। .... वैसे देर का कारण सबको मालूम था।" यह बात यह संकेत करती है कि अफसरों की देरी विशिष्टता की पहचान बनाती है। यह कारण सब जानते है। समाज में मध्यवर्ग के लोगों को यह बात समझ में नहीं आती कि इण्टरव्यू देने वाले में से ही लोग कल उनकी सीट के बगल में ही बैठेंगे। जो लोग इन्टरव्यू के लिए आये हैं वे खुलकर आपस में बात तक भी नहीं करते। कलेक्टर और बेरोजगार युवकों का संबंध शोषक और शोषित के अन्तर्संबंध में विसंगति को उजागर करता है। जब काफी समय हो जाता है, तो कुछ लोग आपस में सामाजिक वार्तालाप करते हैं जिसमें केवल दिखावापन ही नजर आता है। जब कलेक्टर के बंगले पर उम्मीदवारों की भीड़ आनी yo होती है। और तो प्रत्येक उम्मीदवार मन में सोचता है कि यह साथी न आता तो अच्छा रहता- "सबके दिलबुरी तरह धड़क रहे थे और वे बिना Te की बात या लगभग प्रत्येक बात पर अस्वाभाविक रूप से मुस्करा पड़ते। उनके मुँह लाल हो उठते और वे कलेक्टर के आलीशान बंगले, अहाते में खिले रंगीन तथा खुशबूदार फूलों और फाटक पर खड़े अकडू चपरासी को प्रशंसापूर्ण नेत्रो से देखते।"

इससे पता चलता है कि मध्यवर्गीय बेरोजगार आपस में ही सामान्जस्य नहीं बैठ पाते और एक-दूसरे को ईर्ष्या से देखते है। कुछ प्रत्याशी उस सुन्दर जगह की तारीफ में कशीदे भी पढ़ते है- "यह जगह भी बड़ी सुन्दर है। सड़क कितनी साफ सुथरी है, तबियत करती है यही लेट ons, बंगला भी लाजबाब है, किसी विदेशी इन्जीनियर का बनाया हुआ मालुम पड़ता है। ऐसे दृश्य दिल्ली, बम्बई में ही पाये जा सकते हैं। मैं तो सब घूम चुका हूँ। यह कहकर वे नम्रता, आत्मसंतुष्टि तथा गर्व के साथ उस कूपमंडूप महाब्रह्मण की तरह ear?

यह उनकी मौलिकता एवं आत्म संतुष्टि का प्रतीक है जिसका कोई मेल नहीं होता। वे चपरासी से लेकर कुत्ते तक पर वार्तालाप करने लगते हैं। एक सज्जन अपना ज्ञान दिखाता हुआ, कुत्ते के बारे में कहता हैं कि- "वैसे तो अमेरिकी मालूम पड़ता है बहुत होगा तो ब्रिटेन का हो सकता है। ब्रिटिश कुत्ते भी ऐसे ही होते हैं।"" फिर दूसरा व्यक्ति कहता है- "कनाडा का है स्वभाव का अच्छा है। शरीफो से कुछ नहीं बोलता किन्तु बदमाशों को फौरन Ye लेता है, उन पर पिल पड़ता है। मैं तो उसके पास चला जाता हूँ और वह चुपचाप पड़ा रहता।" जबकि कुत्ते के बारे में किसी को कुछ पता नहीं था किन्तु वे लोग सिर्फ डींगेमार रहे थे।

अन्तत: कुछ लोगों का 'इन्टरव्यू' होता है और परिणाम की सूचना दी जाती है कि एक योग्य आदमी को चुन लिया गया है। अब किसी का "इन्टरव्यू नहीं होगा। फिर सारे भ्रष्टाचार को कोसते चल देते हैं। कथाकार ने इसी योग्यता और अयोग्यता की विसंगतियों को दिखाते हुए, भ्रष्ट प्रशासन की तस्वीर दिखायी है।

'संत तुलसीदास और सोलहवाँ साल" कहानी में agen रणबहादुर सिंह का उनके मित्रों ने संत तुलसीदास नाम रख दिया। इसका यह कारण था कि उनकी पत्नी उनसे बेहद प्यार करती थी और वह रत्नावली के समान सुन्दर थी। रणबहादुर सिंह का विचार था कि नहीं करेंगे क्योंकि शादी से आदमी बंधन में बंध जाता है। परन्तु उनकी माँ हाईस्कूल पास होते ही शादी की घोषणा कर देती है- "आम पक गये है, क्योंकि ect चलने शुरु हो गये है। उसी वर्ष उनकी शादी तय हो गयी।" शादी तय होने के बाद रणबहादुर सिंह ने कहाँ कि शादी होने से कोई मतलब नहीं है। मेरा विचार तो वही है जो पहले था। परन्तु पत्नी के आते ही उनके सारे विचार बदल गये। और पत्नी के साथ हंसी ठिठौली में समय बिताने के कारण वे एम.ए. फाइनल में फेल हो गये। घर से लेकर रिस्तेदारों में भी उनकी बदनामी होती है। इससे वह घर छोड़कर बाहर पढ़ने चले जाते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक पढ़ाई पूरी नहीं होगी वह घर नहीं आयेंगे। किन्तु बाद में पत्नी के कारूणिक पत्रों के कारण वह पढ़ाई छोड़कर घर चले आते हैं।

मध्यवर्ग की यही गलती है कि अपने परिवार में लड़के-लड़कियों की शादी बहुत जल्दी कर देता है। वे लोग अपने उत्तरदायित्व में केवल विवाह को ज्यादा महत्व देते है किन्तु इससे किशोरों एवं किशोरियों की प्रगति रुक जाती है। और फिर इसका दोष उन्हें ही दिया जाता है। मध्यवर्ग में अनमेल विवाह की समस्या बहुत पहले से विद्यमान है। यह नवयुवकों की जिम्मेदारी का अनुभव कराकर उनके विकास को विराम लगा देती है।

"गले की जंजीर', 'छिपकली और सपूत' कहानियों में मध्यवर्ग की अमरगाथा को चित्रित किया गया है। और साथ ही यथार्थ की कड़वाहट के बीच जीवन जीने की जिजीविषा एवं संघर्ष के प्रयास का भी चित्रण मिलता है। गले की जंजीर कहानी में जब पत्रकार की जंजीर चोरी हो जाती है, तब यह खबर समाचार प्रेस में आग की तरह फैल जाती है- "जिससे भेंट होती, वह अवश्य पूछता कहिए शर्मा जी, आपकी जंजीर खो गयी? उत्तर देने से पहले ही से तैयार प्रश्न आता कैसे? सभी लगभग यही प्रश्न पूछते और मैं विस्तार के साथ बताता।" अफसोस! कि सब यही प्रश्न पूछते और सामने दुःख प्रकट करने के अलावा बिना जड़-पेड़ की सलाह दे देते। और पीठ पीछे मजाक उढ़ाते। मध्यवर्ग के लोगों में यह बातें खास तौर से देखी जाती है। शर्मा जी की खुद की जंजीर नहीं रहती। वह दूसरे से मांगकर पहने होते हैं। औरतों में गहने की लालसा तो प्रेमचंद ने गबन में दिखाया ही था, परन्तु अमरकान्त ने इस कहानी में मध्यवर्गीय पुरुष की आकांक्षा को दर्शाते हुए जंजीर लेना और गायब होने के बाद की मानसिक दशाएँ और विसंगतियों को

पूरी कहानी में चित्रित किया है। मध्यवर्ग के पास जितना है अगर उतने में ही संतोष रखे तो ऐसी समस्यायें कभी नहीं आ सकती।

'छिपकली' कहानी भी प्रेस जगत से संबंधित है। इसमें मध्यवर्गीय रामजीलाल के जीवन की वेदना को दिखाया गया है। रामजीलाल का परिवार बड़ा है। वह सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक अखबार के दफ्तर में मेहनत करते और कष्ट सहते रहते हैं। परन्तु दूसरे के दुःख को देखकर उनको आत्मसंतुष्टि मिलती है। यह मध्यवर्ग की विसंगति है कि वह

अपने ही कष्ट को नहीं देखता अपितु दूसरे के कष्ट में मजा लेता है। कहानी में कथाकार ने बताया कि- "जब रामजी लाल यह सुनता कि दुनिया का प्रलय होने वाला है या कहीं पर महामारी से हजारों आदमी मर गये या कोई व्यक्ति घोर कष्ट में पड़ गया है तो उसको संतोष और उत्साह से रोमांच हो आता |" मध्यवर्गीय व्यक्तियों में विसंगतियों के कारण ही उतार चढ़ाव अधिक देखा जाता है। फिर भी इन कहानी में रामजी लाल परेशानियों के बावजूद वह मिथ्याभाषिता तथा दूसरों पर va झाड़ने से नहीं चूकता।

aye कहानी भी हिन्दी पत्रकारों से संबंधित है। विवेक व शिवप्रकाश को केन्द्र में रखकर मध्यवर्ग के लोगों के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि- "जमाना तेजी से आगे बढ़ रहा था बहुत से लोग त्याग और कुर्बानी का रास्ता छोड़ चुके थे और सुख से जीवन बिता रहे थे।"" जमाना तेजी से आगे नहीं बढ़ता जबकि लोगों की सोच से परिवर्तन होता है उस परिवर्तन के क्रियात्मक रूप ही समाज में व्याप्त होता रहता है। विसंगतियाँ है कि मध्यवर्ग आदर्श की खोखली पोटली लिए घुमता फिरता है। इस कहानी में मित्र पत्रकार में पत्रों के माध्यम से अतीत एवं भविष्य के धरातल पर समाज में मध्यवर्ग की विसंगतियों को उजागर किया है।

'डिप्टी कलक्टरी' कहानी अमरकान्त की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। यह कहानी एक मध्यवर्गीय पिता की संवेदना को परिलक्षित करती है। इसमें एक पिता की मनःस्थिति की पीड़ा को दिखाते हुए मध्यवर्गीय परिवार की जीवन स्थितियों का सजीव रूप प्रस्तुत करती है। शकलदीप बाबू अपने बेटे को डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा देने के एवज में सारी सुख सुविधाओं का ख्याल रखते है। उसकी फीस खाना-पीना और जेब खर्च हेतु पैसे की भी समुचित व्यवस्था करते है। अन्ततः परीक्षा का परिणाम अनुकूल के विपरीत रहता है।

मध्यवर्गीय समाज में लोग आशंका के इन्द्र से ग्रस्त रहते है। शकलदीप बाबू के घर में परीक्षा के परिणाम अनुकूल न होने के कारण बेबशी छायी रहती है। उन्हें डर था कि नारायण कहीं आत्महत्या न कर ले- "वह धीरे से चोर की भांति पैरों को दबाकर कमरे के अंदर दाखिल हुए। उनके चेहरे पर अस्वाभाविक विश्वास की मुस्कराहट rw रही of"? परन्तु मन की अशंका का डर उनके चेहरे पर था- "शकलदीप बाबू एकदम डर गये और उन्होंने काँपते हृदय से अपना बायाँ कान नारायण के मुख के बिल्कुल नजदीक कर दिया

और उस समय उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, जब उन्होंने अपने लड़के की सांस को नियमित रूप से चलते पाया।""

यहाँ पर इस कहानी में आशा-निराशा एवं शंका के ऊहापोह से ग्रस्त मध्यवर्ग की विसंगतियों को दर्शाया है।

आर्थिक एवं सामाजिक विसंगतियाँ

'जिन्दगी और जोंक', 'a चरित्र', 'बस्ती' और 'जोकर' कहानियों में मध्यवर्गीय समाज में रहने वाले मध्यवर्ग के लोगों में भिन्नता के रूप को चित्रित किया है। शोषित पात्रो के जरिये अमरकान्त ने थोथले मध्यवर्ग के आदर्शवाद को दिखाया है।

'जिन्दगी और जोंक' कहानी में एक दीन-हीन बेसहारा रजुआ नाम के wey के जीवन की असाधारण प्यास oT Reef, करुण संवेदना को दिखाया गया है। इसमें रजुआ की पीड़ा, केवल जीवन जीने की पीड़ा नहीं है, अपितु आज के सामान्य जिन्दगी के सामाजीकरण की पीड़ा है। इसमें जीवन का दुर्निवार संघर्ष और बोझ है। वह जिस जगह रहता है। वहाँ सबका काम करके मेहनत मजदूरी करके कुछ पैसे को इकट्ठा करके बरन की बहु के पास जमा कर देता है। बरन की बहू इसके दस रूपये मार लेती है। रजुआ के अंदर परिवार वसाने की भी चाह रहती है। इसलिए वह पगली नंगी औरत को अपने साथ रखना चाहता है इस उद्देश्य से वह उसे छत पर ले जाता है। जिसको देखकर समाज के लोग उसे मार पीटकर भगा देते हैं। एक बार शिवनाथ बाबू के यहाँ उस पर गलत चोरी का आरोप लगता है। उसे बहुत मारा जाता है। जिस पर वह बार-बार कहता है कि मैंने कुछ नहीं लिया। orca: लोग उसे खाना पीना नहीं देते। कुछ दिनों बाद उसे हैजा तथा बाद में खुजली हो जाती है। अन्त में उसी मुहल्ले में ही उसकी मौत हो जाती है- "चूँकि वह मरना न चाहता था इसलिए जोंक की तरह जिन्दगी से चिमटा रहा | लेकिन लगता है, जिन्दगी स्वयं जोंक सरीखी उससे चिमटी थी और धीरे-धीरे उसके रक्त की अन्तिम बूंद तक पी गयी।" तात्पर्य यह है इस कहानी में मध्यवर्ग निम्नवर्ग को नौकर के रूप में देखता है जबकि विसंगति यह है कि वह खुद किसी और का नौकर रहता है। इसमें सामाजिक व्यवस्था की यथार्थ झलक दिखतें हुए समाजवाद के स्वप्नों को a रूप दिया है। दो चरित्र कहानी में भी भिखमंगों का चित्रण मिलता है। कहानी में जनार्दन और कन्हई का वार्तालाप चलता रहता है- "भाई ऐसी बात तो कहिए मत। यह आम फैशन हो गया है कि कोई बात मन के खिलाफ हुई नहीं, और हमने उसका दोष सरकार के सिर पर मढ़ दिया। आखिर आप ही बताइये सरकार करे तो क्या करें|" परन्तु यह बात होती रहती है कि अचानक कुछ दूर पर भीखमंगों की आपस में लड़ाई होती रहती है। जनार्दन इस भीड़ को देखते ही भिखमंगों के विरूद्ध बयान देते है।

धर्मार्थ के रूप में पेशकर को रविवार के दिन भीखमंगों को भीख देने में मजा आता है। बस्ती कहानी में आत्मानंद बस्ती के दोनों तथाकथित नेताओं की बड़ी-बड़ी दिन बातो में छला जाता है। अन्त में जब उसके सामने सच्चाई आती है तो इससे उसका जबरदस्त

मोहंभंग होता 8 "उसके दिल के जैसे असंख्य टुकड़े कर दिये गये हो, क्या दुनियाँ ऐसी है? कया विश्वास का यही फल मिलता है? कितना बेवकूफ उसे बनाया गया है? उसकी जिन्दगी का क्या महत्व है? उसने क्या पाया अभी तक? न

उसे ख्याति ही मिली और न धन ही?" आत्मनंद रामलाल और बांकेलाल के बीच में अपनी विसंगतियों के कारण वास्तविक प्रवृत्ति सेवा भाव को भूल जाता है।

'मूस' कहानी में अमरकान्त ने निम्न मध्यवर्ग के पात्र की विभिन्न विवशताओं का चित्रण किया है। इसमें निम्नवर्ग की संगतियों और असंगतियों की, उनकी जटिलता और सरलता की स्वार्थपरता और त्यागशीलता की बड़ी मार्मिक दशा का वर्णन किया हैं। 'मूस' छ: सात घरों में पानी भरने का कार्य करता था। उसके जीवन शैली के बारे में अमरकान्त ने लिखा- "मूस का जीवन उस मरियल बैल की तरह था, जो चुपचाप हल में जुतता है, चुपचाप मार सहता है और चुपचाप नींद में भुखा रहता है। उसको देखकर यह कहना मुश्किल था कि उसकी कोई इच्छा या अनिच्छा भी है। उसके मुख पर कोई भाव नहीं था और वह ऐसी पुरानी मशीन की तरह लगता, जो वर्षों से काम करते रहने पर भी खराब नहीं होती | एक कोने में gap कर वह रोटियाँ उस रोगी की तरह निगल जाता, जो मीठी दवायें खाने में आपत्ति नहीं करता |"

यद्यपि मूस का व्यक्तित्व आकर्षण रहित अर्थात् कुरुप था, फिर भी अमरकान्त ने ऐसे पात्र का चयन किया जो पाठक के मन पर गहरा प्रभाव डाल सका। वह निम्नवर्ग का प्रतीक होते हुए जन सामान्य की कथा व्यथा को प्रस्तुत करता है।

'vera के फूल में' कहानी में जमींदार नवल किशोर राय अपने मित्र हृदय नारायण को स्वयं द्वारा किये गये शोषण की कथ को बड़ी वीरता पूर्वक सुनाता है। इसमें समाज के लोगों का विलासी रूप का चित्रण दिखाई देता है। वह अपने मित्र से गर्व पूर्वक कहता है कि- "बिरादर कसम खाकर कहता हूँ, पता नहीं क्या हो गया था जहाँ किसी जवान स्त्री को देखा नहीं और पागलपन सवार हुआ। खास तरह से इसका मजा बिहार वाले इलाके में खूब था वहाँ के लोग बहुत गरीब और पिछड़े हुए थे मैं साल में आठ नौ महिने तो वहीं रहता और ta oan"

इस तरह समाज में लोग पुरुष के रूप में खुंखार भेड़ियें के समान थे। इन लोगों की जमींदारी खत्म हो चुकी थी फिर भी ये अपने जमींदारीगिरी को बरकार रूप देने में ये लोग पहले गाँव की बहू-बेटियों को बहलाते-फुसलाते जब इसका असर न पड़ता तो पिटवाने की धमकी भी देते। जमीदार भुलई किसान की बेटी अंजोरिया को बहला फुसलकार भुलई को पिटवाकर छल प्रपच के द्वारा उसका दैहिक शोषण करता है। अंत में वह गर्भवती हो जाती है तब अपना घिनौना रूप दिखाते हुए उसे त्याग देता है।

इस तरह की स्वार्थ परता, विलासता नीचता, कटुता, छल प्रपंचता आदि के कुकृत्य भी कुछ मध्यवर्गीय समाज के लोगों में दिखाई पडत्रते हैं। जो समाज में अकाश भवर की तरह जीते हैं और अपने वजूदों को दूसरों के कृत्यों के आधार पर टिका देते हैं। मध्यवर्गीय समाज में ऐसे व्यक्तियों के चरित्र को अमरकान्त ने सामने लाकर सामान्य जनता को इनसे बचने के लिए आगाह किया है।

"बहादुर" कहानी का कथानक "घर से भागे' पहाड़ी लड़के के जीवन में घटने वाली विवधि घटनाओं से निर्मित हुआ है। इन घटनाओं के घटित होने में सक्रिय सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक कारणों की खोज और उनके विश्लेषण ने इन कहानी को सार्थकता प्रदान की है-- "बहादुर की वजह से सबको खूब आराम मिल रहा था। घर खूब साफ और चिकना रहता। कपड़े चमाचम सफेद | निर्मला की तबीयत भी काफी सुधर गयी ।"" मध्यवर्ग में नौकर रखने का प्रचलन वह रहा है परन्तु अपने बड़पन्न के कारण नौकर पर शोषण द्वारा धीरे-धीरे अधिकार जमा होते है। बहादुर पर रूपये चोरी का इल्जाम लगता है तुमने यहाँ से रूपये उठाये थे? जी नहीं, बाबू जी। उसने निर्भय उत्तर दिया। ..... सच-सच बता बहादुर | अगर नहीं बतायेगा तो बहुत पीटूंगा और पुलिस को सिपुर्द कर दूगा।"" इस पर उसे मार पड़ती है और फिर घटना के बाद उसे आये दिन पिटाई हो जाती थी। एक दिन वह घर पर अपना सामान, रूपया सब छोड़कर चला जाता है। जब वह चला जाता है तब घरवाले उसकी कीमत समझते हैं और खुद को कोसते है।

इस प्रकार बहादुर कहानी में जीवन की विसंगतियों विदुपताओं के चित्रण द्वारा त्रासद बिन्दु पर समाप्त होती है। घर के लोगों को अपराध बोध और लघुता बोध के बीच झूलता छोड़कर चले जाने वाले बहादुर के माध्यम से अमरकान्त ने मध्यवर्गीय नैतिकता और आदर्श का खुला चित्रण किया है।

कहानी दो युवकों के मित्रवत बात चीत से शुरु होकर शराब पीकर घर लैटते समय एक वेश्या से शारीरिक सुख लेने के बाद जब उसे पैसे देने की बात आती है तो gee के बहाने बाहर निकल कर भगने लगते हैं जिस पर एक आदमी पीछा करता है तो उसे चाकू से छोपकर अंधेरे में गायब हो जाते हैं। हत्यारे कहानी में यह नाम हत्यारे उस व्यवस्था को हत्या का प्रतीक है जो स्वाधीनता आंदोलन के समय एक यूरोपिया के समान भारतीय जन मानस में व्याप्त थी। यहाँ पर समाज में ये तत्व को एक व दो नहीं है, बल्कि एक पूरी यूरोपिया की पीढ़ी मौजूद है।

इस कहानी में जब कुकृत्यकर दोनों नैतिक बातें बोलकर भागते हैं- "आज समय आ गया है कि हमारे नवयुवक, बुद्धिमानी, मौलिकता, साहस और कर्मठता से काम लें। मैं पूर्ण अहिंसात्मक तरीके से उनका पथ-प्रदर्शन करना चाहता हूँ। दोनों ने झटपट अपने जूते उतार कर अपने हाथों में ले लिए। भागसाले! आर्थिक और सामाजिक क्रांति करने का समय आ गया है।"' समाज में आर्थिक तंगी से परेशान होकर ही कोई स्त्री अपना शरीर

बेचती होगी। परन्तु ऐसी स्त्री रूपी वेश्या का भी शोषण करने वाले कहानी के पात्र कितने संवेदना शून्य होंगे, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। यह विसंगति समाज के गिर्द अनेक स्थानों पर विद्यमान है और इससे नैतिकता का पतन भी हो रहा है।

आमंत्रण" कहानी भी मध्यवर्गीय द्वारा निम्न मध्यवर्ग के शोषण एवं विसंगति पर आधारित है। कहानी आमत्रण में ठाकुर जयमंगल सिंह के यहाँ रजनीकांत, कमलदेव सिंह, प्रो. चन्द्र बिहारी वर्मा और जनकी प्रसाद व्यवसाई के साथ जब

मिलने आते हैं तब ठाकुर जयमंगल सिंह उनके साथ अपेक्षित व्यवहार नहीं करते है। परन्तु जयमंगल सिंह के खौफ से वे लोग कुछ नहीं कहते। सब के मन में ठाकुर का भय समाहित रहता है। यह भय सभी निम्न मध्यवर्गीयों में दिखाई देता है-- "लगभग एक aver ule करने के पश्चात जब ठाकुर जयमंगल सिंह बाहर न निकले तो सबके चेहरे से लाचार खीझ का भाव प्रकट होने लगा।" जब तक जयमंगल सिं बाहर नहीं आते, तब तक वे सब सिद्धान्त के पाठ से एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते रहते हैं। परन्तु जब वे आ जाते है तो सभी के सारे नैतिक सिद्धान्त तथा समिति से संबंधित सूची धरी की धरी रह जाती है। अन्ततः वे मधुर वाणी में सिर्फ दो बातें ही कह पाते हैं- "श्रीमान् जी से हम दो बातें चाहते हैं एक तो यह कि आप स्वागत समिति के सभापति का आसन ग्रहण करने की कूपा करें। दूसरी प्रार्थना यह है कि सभा के सामने कुछ वित्तीय कठिनाइयाँ है"

इस तरह उदारता पूर्वक कार्यक्रम के लिए आर्थिक मदद की मांग की जाती है। ठाकुर जयमंगल सिंह धन से अधिक वित्तीय सहायता प्रदान करने की बात तो कहते हैं। लेकिन न वे धन देते हैं और न लोगों के द्वारा मांगे गये प्रत्यक्ष सहायता की बात को ही स्वीकार करते हैं। इस तरह अमरकान्त ने facta में विसंगतियों के द्वारा मध्यवर्गीय समाज में लालसाओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति का प्रश्न खड़ा किया हैं।

'सप्ताहांत' कहानी में मध्यवर्गीय परिवार राम संजीवन उसकी पत्नी, चार बेटियों एवं पुत्र से जुड़ी जीवन की कहानी है। परिवार के बढ़ने एवं आर्थिक दबाव के कारण राम संजीवन लाटरी के टिकट से किस्मत को ऊँचाईयों पर ले जाने का खवाब देखता है। गुजारा चलाने के लिए उसे हर समय काइयाँपन और चाल की करनी पड़ती है। क्योंकि इसके बिना उसका काम ही नहीं चल पाता था। राम संजीवन पैसे मिलने के पहले ही खर्चे की योजना बनाने लगता है- "राम संजीवन बहुत ही गम्भीरता से अपनी योजना बता रहा था। पहले तो बनेगा मकान फिर लड़कियों की शादी होगी। एक-एक लड़की पर बीस-बीस हजार। इसके बाद शेष रूपये बैंक में जमाकर दिये जायेंगे और उनके सूद से आराम से जिन्दगी oot परिवार के सभी सदस्य पैसे आने की खुशी में खूब प्रसन्न थे। यथार्थ है कि मध्यवर्ग में एक शुभ सूचना व्यक्ति को बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर देती है। परन्तु सुबह अखबार में जब राम सजीवन का नाम विजेताओं की सूची में नहीं रहता तो वह बहुत दुखी होता है और घर चारो तरफ से बंद कर अफसोस मनाता है। घर की भी नौकरी कैसे दिला सकता हूँ? फिर नौकरी के लिए सारे कायदे कानून है, परीक्षायें। बार-बार आश्वासन देने पर अंत में इंजीनियर साहब का यह कहना युवक के अरमानों का गला घोटना था। 'घर' कहानी में विनय नाराज होकर घर से निकल जाता है। किन्तु रोजगार की तलाश में उसकी स्थिति aga दयनीय और हास्यास्पद हो जाती है। अंत में भटकते भटकते बलराम सिंह के स्वामित्व में वह कार्य करता है और शोषण का शिकार होता है। विनय को अपनी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिलता विनय से एक व्यक्ति कहता है कि-- "भाई एक नौकरी है। ऐसा ही काम है। 400 रूपया महीना तनख्वाह देगा इसके अलावा तीन रूपये रोज और दोनों जून का भोजन। उसका सारा काम देखना usm |"

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

इस प्रकार एक VAN. पास नवयुवक बेकार की तरह घूमता है और अंत में समाज में विसंगति के कारण अपने दर्जे से ओछा काम करने को तैयार होता है। परन्तु यहाँ पर उसका शोषण ही होता है।

'सवालों के बीच लड़की' कहानी शिक्षा की अभिलाषा धारण किये एक लड़की की दास्तान है जो तरह-तरह के सवालों से घिरी रहती है। जानकी जब पढ़ने लगती उसकी माँ जतिया उसे खूब डाँटती और काम करने के लिए कहतीं जतिया की सोच पुराने जमाने की रहती है वह पढ़ाई की महत्ता को नहीं समझती तथा घर गृहस्थी के कार्यों में दूसरों को चेताते हुए अपने बीते दिनों का हवाला देती है। जानकी के पिता अकलूराम कुछ पढ़े लिखे तथा शिक्षा की महत्ता को समझते थे बेटी के शिक्षा के प्रति रुझान को देखते हुए उसे खूब पढ़ाई में सहयोग देते। माँ के सवालों से वह घर में घिरी रहती और बाहर समाज के ताने अलग से मिलते। फिर भी उसका धैर्य कभी डगमगाता नहीं। वह गणित पढ़ने के लिए अपने सहेली के साथ नरेश सिंह के यहाँ जाती हैं जो कि एक गणित के रिडार्यड प्रोफेसर थे। वहाँ उनकी पत्नी रामदेवी से उन दोनों की मुलाकात होती है। और दोनों को रामदेवी हेय की दृष्टि से देखती है। वह उनसे तरह तरह के उट-पटांग सवाल करती है जिससे उन दोनों को वहाँ निराश होना पढ़ता है। और बाहर निकलते ही एक युवक उमेश से टकराहट हो जाती है। वह उनसे बेहदगी से बोलता है- "अच्छा बतारऊँ मैं कौन हूँ? तुम क्या बताओगे ... जाओ अपने राते! वे जब आगे बढ़ गयी तो नौजवान ने हँसते हुए यह टिप्पणी छोड़ी- "बड़ा छनकत ay हो ... जल्दिए मालूम हो जाई।""

इस तरह वह विसंगतियों के कारण तमाम सवालों से घिरी रहती है। अकलूराम स्वयं कम पढ़े होने के कारण अपनी बेटी को अधिक शिक्षा देना चाहता है। परन्तु उसकी अपनी विसंगति है कि वह समाज के बनाये अंधविश्वासी कानून को तोड़ नहीं पाता और जवान होती लड़की की चिन्ता करना लाजमी है। वह यह सोचता है कि पारिवारिक मर्यादा, सम्मान एवं इसके विवाह आदि का क्या होगा।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक विसंगतियाँ

कहानी में राजनीति के माध्यम से मध्यवर्ग को आश्वसनों के द्वारा ठगा जाता है। इसमें कुलदीपक भारती समाज सेवा के झूठे वादों के कारण नेता बनता है तथा अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए अनैतिक कार्यों को भी sora देता है। वह समाज के उस पद का प्रतिनिधित्व करता है। जनता के विकास के लिए अनेकों नेक काम करने झूठी oe) खाता है। तथा चुनाव जीतते ही मुँह फेर लेता है। एक बुढ़िया जब अपने लड़के को चपरासी बनवाने के लिए अनुरोध करती है, तो वह अपने अधिक काम का दिखावा कर उसको आश्वासन देने के लिए दोलफ्ज भी नहीं बोल पाता।

कुछ जगह पर दंगे होते हैं। तो वह उन जगरों पर न जाकर प्रेस में एक वक्त्व्य छपवा कर संत्वना देता हैं- "देश एक संकट के दौर से गुजर रहा है, जातिवाद व समप्रदायवाद हमारे देश के दो भयंकर शत्रु है, जनता को इन दोनों शत्रुओं

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

से बचकर रहना होगा। विभिन्न जातियों व सम्प्रदायों के बीच प्रेम व भाईचारा स्थापित करने से ही हमारा देश विश्व में सम्मान पूर्ण स्थान बना सकता है। मैं अपील करता हूँ कि लोग छोटे-छोटे झगड़ों को छोड़कर ऊपर उठें और इस शहर व देश की प्रेम शांति की महान परम्परा पर चलते हुए नव निर्माण में आज सहयोग दें।॥"?

इस तरह वह मध्यवर्गीय समाज काव्यार्कत समाज में निम्नवर्ग को किस प्रकार दुत्करता है। तथा फिर समाज में होने वाली घटनाओं को अपनी संवेदना के द्वारा समाज को बरगलाता है। वह उन लोगों की संगति से दूर रहना चाहता है जो उसे उस पद और प्रतिष्ठा पर पहुँचाते हैं।

'श्वान गाथा" कहानी में स्वार्थता का चित्रण मिलता है। शहर में नेतागण अपने स्वार्थ के लिए क्या-क्या करते हैं इसका सटीक उदाहरण इस कहानी में दिखाई देता है। इसमें आधुनिकता की दौड़ को दिखाते हुए हर समस्या में वाद-विवाद होते हैं। परन्तु समस्या का सही निराकरण नहीं हो पाता। समाज में लोग बिजली, पानी, सफाई, महगाई आदि की व्यवस्था के लिए हाहाकार करके शांत हो जाते है। साफ-सफाई नहीं होती और गंदगी पर कुछ कुत्ते मंडराने लगते हैं। पूँजीपति विमलदास के बेटे को डॉ. सायकिल चलाने के लिए कहता है, वह सुबह सायकिल चलने निकलता है। उसी वक्त कुछ आवारा कुत्ते काट लेते हैं इस घटना से हंगामा खड़ा हो जाता है और अखबारों में बहुत बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जाता है। जिससे प्रशासन भी हरकत में आ जाता है। और कुत्तों को पकड़ने का अभियान चला देती है। सारा शहर इससे परेशान रहता है। कुछ मनगढ़न्त खबरे आती है कि इनकी संख्या 2350 से बढ़कर 30270 हो गयी है। शहर में कुत्तों को पकड़कर गाड़ी में भरा जाने लगा। तभी एक पालतू कुत्ते को पकड़ा जाता है जिस पर हंगामा खड़ा हो जाता है। जमादार कहता है कि सरकारी हुक्म है इस पर सज्जन चिल्लाते हैं- "कैसी सरकार किसकी सरकार ये कुत्ते क्या सरकार के बाप के हैं? हमें खूब मालूम है कि सरकार इनको पकड़वाकर विदेश भेज रही है, जहाँ इनको बूचर और सलाटर किया जायेगा और इनकी जीभ और ब्रेन से दवाईयाँ बनाई जायेंगी Sa पर हंगामा

इतना बढ़ जाता है कि लाठी चार्ज हो जाती है। जिसके शहर की, स्थिति द्वारा दूसरी पार्टी लाभ लेती है और मध्यवर्ग के लोग दो पक्षों में de जाते हैं। दुकाने बंद हो जाती है। कीमतें बढ़ाई जाती है। इस स्थिति को देखते हुए विमल दास ने फौरन श्वान विरोध अभियान बंद करबा दिया।

इस कहानी में मध्यवर्ग की विचारधारा पर प्रश्न उठता है। वह अपनी विचार धारा इतनी जल्दी परिवर्तन करता कि समाज को विसंगत हो जाना स्वाभाविक था। जो जन युद्ध छेड़ने जैसा प्रतीत होता है।

सामाजिक यथार्थ एवं मानवीय संवेदना

अमरकान्त ने अपनी कहानियों में सामाजिक विरोधाभास और विसंगतियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इन्होंने सामाजिक विषमता की स्थिति को अपने पूरे कौशल के साथ चित्रित किया हैं। देश के लोग एक ऐसी कहानी है जिसमें

आम-आदमी भ्रष्ट व्यवस्था के कारण पिसता चला जाता है। इसमें सफेद किस्म के लोग आम आदमी से घृणा करते हुए उन पर काम चोरी और निकम्मेपन का आरोप लगाते हैं। वास्तव में साधारण आदमी से vel लोगों की कोई सहानुभूति नहीं है। मुसाफिर जब Rel से उतरने लगता है तब बढ़े मुश्किल से उतरते ही खून की उल्टी कर देता है। "भीड़ में से लोगो द्वारा पूँछे जाने पर वह अपनी हालत के बारे में जो बताता है तो किसी को भी उससे सहानुभूति हो सकती है। लेकिन सफेद पोश लोगों को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं। इक्ट्ठी हो गयीं भीड़ को वह अपनी लंबी साधनहीन बीमारी और अस्पताल की रास्तान बताता है तो जैसे धीरे-धीरे हमारा पूरा देश इस छोटी सी कहानी पर फैलने लगता sl"?

age: समाज में लोग उस परेशान व्यक्ति को देखने के लिए आते है। अखिल जो थोड़ी देर पहले उसके wer Rai में रहता है। और उसी भीड़ में शामिल होता है। परन्तु उसे शीघ्र ही पश्चाताप की अनुभूति होने लगती है- "अखिल चुपके से बाहर निकल आया, जैसे उसका वहाँ रूकना उचित न हो। उसमें पान की दुकान पर जाकर दो बीड़े पान खाये और एक सिगरेट जलाकर उसका कश खीचते हुए आगे बढ़ चला।"*

इस प्रकार कहानी में जड़ता एवं मानवीयता का प्रभाव दिखाई देता है। अखिल की मानसिकता से पता चलता है कि उसके अंदर विसंगतियों का खाका विद्यमान है।

'alt का नगर' कहानी में आजादी के बाद के बढ़े दंगों में एक लड़की की मौत होती है। परन्तु स्थिति स्पष्ट हो नही पाती की यह लाश हिन्दू की है या मुस्लिम की।

आजादी के बाद दंगे बढ़ जाते हैं जिससे शहर में कर्फ्यू लगा दिया जाता है। कर्फ्यू की समय सीमा बढ़ने से आम आदमी को भूंखों मरना पड़ता है। ऐसे समय में जब कुछ समय के लिए कर्फ्यू हट जाता है। तो राम घर से काम पर निकलता है अचानक उसे डर लगता है तमाम तरह की अफवाफे उसे सुनाई देती हैं-- "स्टेशन के पास एक आदमी को

छुरा लगा है। दूसरे ने सूचना दी। हिन्दू हैं! नहीं, 'मोहमदुन है।' 'क्या हिम्मतगंज की तरफ किसीलड़की की लाश मिली है?' 'हाँ' 'मोहमडन है' "नहीं, हिन्दू a

कुछ दिन पूर्व उसी बस्ती में मुसलमानों और हिन्दुओं में आपसी भाईचारा एवं अपनत्व की भावनायें रहती हैं। परन्तु दंगों से ऐसी हालात हो जाती है कि लोगों को निकलना दूबर हो जाता है। राम कई मित्र मुसलमान होते हैं, फिर भी जब वह उस मुस्लिम इलाके से गुजरता है तो उसे अधिक डर लगता है। उसके सामने एक मुसलमान व्यक्ति हाथ में धुरा लिए उसकी ओर दौड़ा दिखाई देता है। उसका शरीर YA पड़ जाता है। वह फुर्ती से पीछे हट जाता है। सारे रास्ते

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

में राम डरता एवं घबराता रहता है। ऐसी घबराहट सभी नागरिकों में थी। चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम। इस दंगों से दोनों पक्ष दुःखी होते हैं परन्तु हालात से निजात पाना बहुत कष्टकर था।

इस दंगे से मध्यवर्ग का व्यक्ति जो रोज कमाने एवं खाने वाला है। अगर वह दो तीन दिन काम पर न जाये तो उसके परिवार की स्थिति aq से बदतर हो जाती है। इस कहानी में असंगति के तत्व भी मिलते हैं जो विसंगत एवं तर्क हीन स्थितियों के कारण उत्पन्न होती है। जिसका प्रभाव संबद्ध व्यक्तियों की चेष्ठाओं और व्यवहार पर भी दिखाई पड़ता है। ऐसी विसंगति एवं तर्कहीनता को इस कहानी में अमरकान्त ने कई स्थानों पर दर्शाया है।

इसी प्रकार 'बीच की जमीन' कहानी में दंगों के बाद की स्थिति एवं चर्चा का अंकन दिखाई देता है। इस कहानी में यह भी दिखाया गया कि कुछ लोग इंतजार करते रहते है कि दंगा हो और वह शांति यात्रा निकले। इससे उनकी राजनीतिक लाभ मिलता है। समाज में बहुतायत ऐसे लोग भी होते हैं। जो मेल मिलास का नाटक करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं परन्तु कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो यह कार्य समाज को संगत से मिलाने का प्रयास करते हैं।

दंगे के बाद कर्फ्यू में ढील दे दी जाती है। इसके बाद कुछ लोग शांति जुलूस निकालते हैं। समाज में वे झुग्गी झोपड़ियों में राशन का वितरण कर राहत कार्य शुरु करते हैं। कहानी में नईम साहब ऐसे ही सामाजिक कार्यकर्ता है। वे अपने शहर के हर मोहल्ले से खास-खास लोगों को बुलाकर दिलों को जोड़ने का कार्यक्रम रखते हैं। उनका मानना था कि इससे हर सम्प्रदाय के लोगों को एक दूसरे को समझने एवं संवाद करने में मदद मिलेगी जिससे शहर में शांति व्यवस्था सुदृढ़ होगी परन्तु- "निश्चय ही कई लोगों के मुँह, Hes की तरह फूले थे। कुछ के चेहरे टेढ़े। सभा का माहौल बड़ा बोझिल थ। संशय डर और एक हल्की सी मनहूसियत हावी थी शुरु में ही सफेद टोपियाँ पहने कुछ नौजवानों का एक छोटा सा जुलूस वहाँ आ पहुँचा, जिनके हाथों में पोस्टर थे। हर पोस्टर पर लिखा था- क्या इस देश में जम्हूरियत बाकी है" यह पोस्टर मकान के फाटक पर चिपका कर, वे नौजवन बुलाने पर भी रुके नहीं, बल्कि गुस्से से घूरते हुए वहाँ से चले गये।" उसके

बाद सभा तितर-बितर हो जाती है। अचानक नईम साहब उठते हैं और सभा को सम्बोधित करते हैं।

शांति सभा का कोई मतलब ही नहीं रहता। फिर भी नईम साहब 'dq की जमीन' की बात करते हैं। उनकी सोच दूरदर्शिता के द्वारा बहुत सटीक और गहरी है। उनका कहना था कि जिस दिन बीच की जमीन खत्म हो जायेगी तब देश समाज सभी के टुकड़े हो जायेगे। मीटिंग समाप्त होती है दंगे फसाद और कर्फ्यू के बाद लोगों को मदद पहुँचाने का कार्य जारी होता है। शांति यात्रा वाले लोग जब एक अधेड़ व्यक्ति के पास पहुँचते हैं तब उसकी बड़ी दयनीय हालत रहती है। वह बूढ़ा एक गठड़ी की ओर इशारा करता है। जहाँ उसकी जवान बेटी ब्लीडिंग से पड़ी थी। यह

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

ब्लीडिंग मददगार कमेटी की ही दी हुई थी। बीच की जमीन की बात करने वाले कुछ लोग ऐसे ढंग की जमीन तलाशते है।

समाज में इस तरह के दंगों के बाद यह स्थिति सामान्यतः दिखाई देती है। विसंगति यह है कि समाज जातिवाद, धर्मवाद, पर लड़ते-लड़ते अपने नैतिक मूल्य एवं आदर्श का भी पतन कर देते है जो स्त्रियों पर कुकृत्य अत्याचार कर ऐसे घिनौने रूप को समाज में परिलक्षित करते हैं। उस समय यह कोई नहीं पूछता कि आप हिन्दू या मुसलमान अथवा ईसाई | यह कहानी मंटो की कहानी 'खोल a की याद को ताजा करती है।

'facial कहानी एक अलग तरह की कहानी है। दो मित्र अपनी आपसी विद्वेष के कारण मित्र से बदला लेने का प्रयास करते हैं। जिसमें एक स्त्री को अपने प्राण गंवाने पड़ते है, यह विसंगति इसमें दिखायी गयी है। यह कहानी बदले की भावना का ट्रैजिक अंत है।

मित्र को अपनी बहन से विनोद पूर्ण बातें करते देखकर; उस व्यक्ति को मन ही मन मित्र से बदला लेने का विचार उत्पन्न होता है। अपने मित्र रामायण को बार-बार घर आने एवं दूसरे की बिबीयों से अपने सम्बन्धों के बारे में बताते हुए तथा अपनी बहन Heart से प्रणय युक्त बातों से वह खिन्न हो जाता है। अन्ततः वह उसकी पत्नी नीलम को फंसाने का प्रयास करते हुए झूठे प्रेम का नाटक करता है। इससे वह सफल हो जाता है। किन्तु इस प्रक्रिया में नीलम उससे सचमुच प्यार करने लगती है। परन्तु वह अपने मित्र को अपमानित करने के लिए इस प्यार को प्रचारित करना शुरु कर देता है। वह अपने प्रेम का ऐसा प्रचार करता है कि उसका मित्र रामायण भी जान सके। एक दिन अचानक रामायण उन दोनों के प्रेमालाप को साक्षात देख लेता है- "सहसा वह मुझ पर टूट पड़ा ... पर मैं स्वयं उस पर प्रहार करने के लिए बेचैन था। मैंने उसको एक ऐसा ten लगया कि वह चारो खाने चित्त हो गया। फिर अंधेरे में मैं गायब हो गया।"" मेरे आने के बाद वह गुस्से में आकर अपनी पत्नी को अत्यधिक मारपीट देता है। जिससे वह मरणासन्न हो जाती है। जब वह उसे देखने आस्पताल जाता है तो- "नीलम अचेतावस्था में पड़ी थी उसके सिर

पर पट्टी बंधी थी। रामायण ने उस रात क्रोध में आकर नीलम को बहुत मारा था उसके पेट में तीन चार महीने का बच्चा था।"" शायद उसने इस तरह की कल्पना नहीं की थी। उसे खुद पश्चाताप होता है कि विजेता की वास्तविता के चक्कर में रामायण का तो कुछ न विगाड़ सका, परन्तु वह स्वयं ही जैसे सब कुछ हार गया हो। उसकी आँखों से आँसू झर-झर वह रहे थे और मन में सोच रहा था कि काश नीलम से माफी मांग सकता।

विजेता ने अपने मित्र के साथ धोखा दिया। साथ ही एक सीधी सादी औरत की गृहस्थी को तबाह पर उसे अपने वासना का शिकार बनाया। उसे भिथ्या प्रेमजाल में फंसाकर उसकी जिन्दगी बिगाड़ देता है। विसंगति के कारण ही विजेता ने

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

मानवीय स्तर से नीचे गिरकर अपने ऊपर व्यंग्य किया है। विसंगतियों के कारण ही oe wher शिशु की मृत्यु विजेता की मानवीयता और भविष्य की मृत्यु का प्रतीक है। इस कहानी में पराजय दो व्यक्तियों की होती है।

मध्यवर्ग का लोगो में कायरता तथा मिथ्याभाषिता का रूप भी देखा जाता है, वह अपने ही वर्ग के लोगों को अपनी ही शक्ति एवं रौब की विसंगतियों के कारण मानसिक रूप से परेशान करता है। मध्यवर्ग से सम्मत रखने हुई। 'शक्तिशाली' कहानी है। इसमें नरेन्द्र पढ़ा लिखा सरकारी नौकर है, तथा उसकी बीबी सुषमा और दो छोटे बच्चे भी साथ रहते हैं। उसके घर के बगल में भोलाराम बदमाश प्रवृत्ति का अपराधी व्यक्ति रहने लगता है। वह नरेन्द्र के परिवार को धीरे-धीरे परेशान एवं तंग करना शुरु कर देता है। उनके सूखते कपड़े को गिराना, घर में हड्डी फेकना आदि बेहूदे कार्यों के द्वारा परेशान करता है। सुषमा अपने पति से शिकायत करती है तो वह vee उसी को Stem और बच्चों को भी बाहर खेलने पर मना करता है। विसंगति यह है कि जब समाज के लोग उसके पड़ोसी के बारे में पूछते तो वह भोलाराम की तरीकों के पुल बाँधता। नरेन्द्र अपने दब्बू और ORR पन के कारण भोलाराम से कुछ नहीं कहता। परन्तु एक शाम भोलाराम we के घर में घुसकर उसकी सुषमा का हाथ पकड़ लेता है और चीखने-चिल्लाने पर उसे छोड़कर चला जाता है। इस घटना को वह रोते हुए अपने पति से बताती है- "हाय उसनें मेरी इज्जत लूट ली मैं कैसे जिन्दा wert'?

इस पर नरेन्द्र शांति से बोलता है कि- "बस इतना ही न ?..... खैर यह कोई खास बात नहीं। मैंने तो समझा था कि उसने कोई और गंदी हरकत की है।"" इस घटना पर भी वह डरते हुए किसी से कुछ नहीं कहता और रात के अंधेरे में सपरिवार घर छोड़कर दूसरी जगह चला जाता है। वह STS पलायन तो कर जाता है। परन्तु प्रतिरोध नहीं कर पाता। वह पुलिस तक का भी सहयोग नहीं लेता। यह विसंगतिपूर्ण भावना मध्यवर्ग के व्यक्ति में आत्मबल की कमजोरी के कारण देखने को मिलती है।

'प्रिय मेहमान', 'शुभचिन्ता', 'लड़की' और 'arrest', 'मछुआँ', 'स्वामी', असमर्थ हिलता हाथ' कहानियों में मध्यवर्गीय विसंगत मानसिकता द्वारा अनेक दुष्प्रवृत्तियों से ग्रसित है।

'प्रिय मेहमान" कहानी में विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक नीरज एवं खुले विचारों वाली परित्यक्त ch नीलम, दोनों के दूषित मनोभावों पर आधारित है। इसमें नीरज जो कि मानवतावादी विद्वान की श्रेणी में आता है। वह नीलम को अपनी हवस का शिकार बनाने की चेष्ठा करता है। लेकिन नीलम की बुद्धिमता के कारण वह इस कुकृत्य को नहीं कर पाता।

नीलम की माता को उसका पति युवावस्था में ही छोड़ चुका था। नीलम को भी उसके व्यवहारिक एवं वर्तालाप की विसंगति के कारण उसे त्याग देता है। फिर तमाम तरह की अफवाहें उठती हैं। क्योंकि समाज में नारी का शोषण सदियों से चला आ रहा है। वर्तमान में सिर्फ शोषण के मुखौटे ही बदल पाये हैं। अन्यथा स्थितियाँ वही विद्यमान है।

नीलम को अपनी पत्नी कि अनुपस्थिति में नीलम के घर आने पर नीरज मन ही मन सोचता है कि वह उसकी पत्नी की अनुपस्थिति में जानबूझकर उसके पास आयी है। वह मन में और भी तर्क करता है, कि यदि वह शरीफ एवं चरित्रवान होती तो इस समय वह फौरन बाहर से ही चली जाती। उसके सारे तर्क सिर्फ औचित्य सिद्ध करने मात्र से ताल्लुक रखते हैं। वह उसे उपदेशक और आत्मीयता एवं प्रलोभन Yao आश्वासन देते हुए कहता है कि- "मैं सब ठीक कर दूँगा तुम्हारे भाग्य को बदल दूँगा। बस मिलते Gad रहना |? इसके बाद वह नीलम को हाथ दिखाने को कहता है वह समझ जाती है और प्रतिकूल जबाब देती हुई चली जाती है। विसंगति यह है कि वह इस समाज में योग्य होने पर भी आर्थिक कठिनाइयों से जूझती हुई जीवन जीती है और समाज में वहसी पुरुषों द्वारा उपहास का पात्र बनती है।

मानव समाज में पुरुष का दोहरापन तथा समाज की wfeal, कुप्रथाओं, संकीर्ण विचारधाराओं, अंधविश्वासों, कट्टर धार्मिक भावना नारी के प्रति संकीर्ण भाव तथा सामाजिक विसंगतियों आदि के कारण मध्यवर्ग की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। अमरकान्त ने नारी के ऊपर होने वाले अत्याचारों को यथार्थता के साथ अपनी कहानियों में चित्रित किया है। 'पेड़ पौधे" कहानी में वे इसी प्रश्न को प्रशांत के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं- "सीमा मैं उन लोगों से नहीं हूँ जो स्त्रियों को अधिकार देना नहीं चाहते, मैं स्त्री और पुरुष में कोई फर्क नहीं समझता, तुम आगे agi, लोगों से मिलो Gel। बहस करो .... पूरी तरह आजाद हो तुम |" इस प्रकार अमरकान्त अपनी कहानियों में मानवीय भावनाओं के erat एवं जिन्दगी की जटिलताओं को दिखाते है।

समाज की विसंगतियों के स्वरूप को दिखाते हुए अमरकान्त ने 'लड़का-लड़की' कहानी में भी आत्म निर्णय का रूप दिखाया है। इसमें लड़का, लड़की को घर घुसरेपन से आजाद करते हुए उसे नये विचारों की रोशनी में लाता है। और आत्मनिर्णय करने के लिए ललकारता है। लेकिन लड़की जब इस निर्णय के साथ आगे बढ़ती है, तो खोखले आदर्शों बाला लड़का किसी दब्बू की तरह भाग खड़ा होता है। और लड़की अपने आत्म विश्वास भरे धीरजवान कदमों से आगे बढ़ती जाती है।

'असमर्थ हिलता हाथ' कहानी में मीना प्रेम विवाह का निर्णय लेती है। किन्तु विसंगति युवक से शादी को घर वाले नहीं मानते तथा विरोध करते हैं| घर में कुहटाम मच जाता है। इसकी माँ लक्ष्मी भी इस शादी के खिलाफ रहती है। वह कहती है कि- "हे भगवान! इसने हमारी इज्जत चौराहे पर फोड़ दी। मैंने पैदा होते ही इसका गला क्यों नहीं घोट दिया। अब इसका पढ़ना लिखना बंद। ब्राह्मण की लड़की को पढ़ने-लिखने से क्या मतलब?" इस प्रकार समाज में विसंगत प्रेम के कारण तरह तरह से पाबन्दियाँ लगायी जाती है। दिलीप उसकी जाति का न होने कारण ही, उन दोनों के प्रेम को अलग किया जाता है। समाज में विसंगति के कारण मध्यवर्ग के अंदर तमाम तरह के ऐसे उदाहरण देखे जा सकते हैं।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 13–32

'कुहासा' कहानी में दूबर नाम के एक किशोर की दुःख भरी कहानी है। दूबर निम्न जाति में oe है। अमरकान्त ने दूबर के माध्यम से निम्न जाति के जीवन की करुण गाथा को कहते नहीं अपितु तिलमिला देने वाले सच को झकझोर कर रख देते हैं। गाँव में काम न मिलना बारिस न होने से खेती चौपट होना दाने-दाने को मोहताज होना आदि समस्याओं से ग्रसित उसके पिता झीगुर मार पीटकर उसे घर से निकल देते हैं। परन्तु शहर में पहुँच कर दूबर को वहाँ की इमारतें मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर दिखाई देते हैं परन्तु उसे कहीं ठांव नहीं मिलता। शहर में उसे काम नहीं मिलता। बड़ी मुश्किल से एक दिन काम मिलता है और वहीं पर जब कुछ खाने को मिलता है तो वह कुत्ते की तरह भोजन पर टूट पड़ता है। सर्दी का मौसम आ रहा था भिखमंगों के लिए कम्बल मिल रहे थे। उसे भी एक कम्बल मिल जाता है। किन्तु भूख, प्यास और लाचारी की वजह से उसे बेचना पड़ता है। रामचरन उससे कहता है- "मैं 30 रूपये इसके किसी से दिलवा दूँगा, इस रूपये से कोई धंधा शुरु कर देना कल मैं तुझे agar और मूँगफली दिलबा दूँगा, तुम शहर में धूम-धूम कर बेचना और पैसा Weal" कम्बल बेचने के बाद वह उन पैसों से तात्कालिक क्षुधा पूर्ति करता है। फिर शीत लहर से बचने के लिए मुसफिर खाने में जाता है। जहाँ उसे चोर समझे जाने पर दो चार हाथ की चपत भी खाने को मिलती है। अन्ततः वह खूले आकाश के नीचे मूँगफली, मकान, बहन, माँ-बाप आदि के बारे में सोचते हुए मर जाता है।

शहर के लोगों एवं विसंगति के कारण सोया समाज उसके मरने से अचानक जी उठता है और उसकी मृत्यु की तहकीकात शुरु होती है। वह शहर के बीच अपने सीधेपन की वजह से मारा जाता है।

'दोपहर का भोजन' कहानी निर्मम तटस्थता के साथ एक परिवार के माध्यम से समूचे निम्नवर्ग के पीड़ा के अभावों को अंकित करती है। पूरी कथा में कहानी के सभी पात्रों द्वारा एक दूसरे की वास्तविक स्थिति को जानने की बाद की परस्पर छुपाने की कोशिश, कहानी को अति कारूणिक बना देती है। मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक विषमताओं, विसंगतियों तथा संघर्ष को अभिव्यक्त करती हुई यह कहानी परिवार के प्रत्येक

सदस्य को समूचा निगल जाने को तैयार दिखायी देती है। कहानी की प्रमुख पात्र सिद्धेश्वरी पूरे परिवार को दोपहर का भोजन खिलाकर जब स्वयं खाने के लिए बैठती है तो उसके पास केवल एक रोटी शेष रह जाती है। बढ़ती हुई परिवार की आवश्यकतायें, अच्छी नौकरी के अभाव में घर का आर्थिक ढांचा दिन प्रतिदिन दुर्बल होता जाता है। सिद्धेश्वरी पूरे परिवार को झूठी सांत्वना और संतोष देती है। मुंशी जी द्वारा लड़कों को पागल कहने पर वह बोलती है- "पागल नहीं, बड़ा होशियार है। उस जमाने का कोई महात्मा है। मोहन तो उसकी बही इज्जत करता 3

'जाँच और बच्चे" कहानी के केन्द्र में चनरी के पति की मृत्यु की जांच पड़ताल होती है। जांच भी यह जानने के लिए होती है कि मौत बिमारी से हुई या भूंख से।

जाँच अधिकारी पूरे दल-बल के साथ चनरी के घर पहुँचते हैं। चनरी उन्हें बताती है कि सूखे दिनों में उन्हें कोई काम नहीं देता। वे मांगकर अपना गुजारा कर रहे थे। लेकिन इधर कोई उन्हें कुछ नहीं देता था। इस कारण वह पानी पीकर सो गये और पेट में दर्द होने लगा उल्टी भी हुई। इस तरह उनकी मौत हो गयी। इसके बाद जाँच अधिकारी कुछ नहीं बोलते। और उसकी मौत के बारे में सोचते हैं- "विशाल समुद्र हैं जिसकी गहराई का पता लगाना उनके जैसे गोताखोर के लिए सम्भव नहीं है। और यहाँ तो वह एक छोटी मामूली बात का ही पता लगाने आये है, जिसका उत्तर जब औरत ने साफ दे दिया है कि न भूख और न बिमारी बस मौत आ गयी - यानी मौत ही मौत का करण |" विसंगति यह है कि हमारे समाज में तमाम तरह की योजनायें चलती है। जिसमें सबसे ज्यादा गरीबों की ही बात की जाती है। परन्तु सामाजिक व्यवस्था में खोट होने कारण मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग आपस की खींचतान में विसंगतियों के कारण आभाव ग्रस्त दिखाई देता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार अमरकान्त ने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्यवर्ग की विसंगतियों को 'पोखरा' में विहार के विभिन्न अंचलों द्वारा पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की चहार दीवारी, 'कबड्डी' में तूफान का आना, "जन्मकुण्डली' में दोपरस्पर व्यक्तियों द्वारा आपसी चालाकीपन, आत्मानन्द जैसे ईमानदार मध्यवर्गीय लोगों की बस्ती, केले पैसे और मूंगफली? में मध्यवर्ग की अपनी सोच और संकोच, जो करें, मैं मध्यवर्ग की काम भावना द्वारा विभिन्न स्त्रियों से संबंधों की विसंगति, सवा रूपये में बायोवृद्ध द्वारा मध्यवर्ग को जीने का कोई न कोई बहाना, Wer' में नौकर को इंसान न समझना आदि कहानियों में मध्यवर्ग की विसंगति तथा कुछ कहानियों में उसी वर्ग के अन्तर्गत निम्नवर्गीय के तनावों को विसंगतियों को कथ्य दिखाया गया है। इनकी कहानियों में खुलापन सादगी, जटिलता, अर्थ की व्यंजना होने के कारण भाषा में माधुर्यपन बताकर दिखाई देता है। ये अपनी कहानियों को सीमित न रखकर व्यापकता की और मोड़ते हुए मानवीय शक्तियों के साथ सीमाओं को भी उद्घाटित करते हैं।

संदर्भ सूची

1. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 09
2. अमरकान्त का कथा साहित्य–बहादुर सिंह परमार, पृ. 26
3. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, अमरकांत, पृ. 13
4. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, अमरकांत, पृ. 13
5. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, अमरकांत, पृ. 14
6. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 15

7. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 15
8. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 31
9. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 23
10. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 223–224
11. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 125
12. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 107
13. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 108
14. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 85
15. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 110
16. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 392
17. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 195
18. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 117
19. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 270
20. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 274
21. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 230
22. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 338
23. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 342
24. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 477
25. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 478
26. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 85
27. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 359
28. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 527
29. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 59
30. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 60
31. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 213
32. अमरकान्त की कहानियों के प्रमुख चरित्र–आशा शर्मा, पृ. 123
33. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 238
34. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 238

35. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 184
36. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 266
37. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 266
38. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 308
39. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 308
40. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 435
41. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 158
42. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 378
43. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 25
44. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–1, अमरकांत, पृ. 66
45. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2, अमरकांत, पृ. 382
46. अमरकान्त एक मूल्यांकन–सं. रविन्द्र कालिया, पृ. 125
47. अमरकान्त कथा साहित्य–बहादुर सिंह परमार, पृ. 70